SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 3, October-December 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

भारत में पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधन पर अध्ययन

डॉ. कंचन जैन, शिक्षाशास्त्र विभाग, सहा० प्राध्यापक, सनराइज विश्वविद्यालय

शोध सार

भारत, समृद्ध जैव विविधता और जीवंत पारिस्थितिकी तंत्रों वाला देश है, जिसके सामने एक गंभीर चुनौती है: आर्थिक विकास को पर्यावरण संरक्षण के साथ संतुलित करना। देश में प्राकृतिक संसाधनों का खजाना है - शक्तिशाली हिमालय से लेकर हरे-भरे जंगल और उपजाऊ मैदान - जो इसके विकास के लिए आवश्यक हैं। हालाँकि, तेजी से औद्योगिकीकरण और जनसंख्या वृद्धि ने इन संसाधनों पर बहुत अधिक दबाव डाला है, जिससे प्रदूषण, वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ पैदा हुई हैं।पर्यावरण संबंधी नियमों को लागू करना, सतत विकास प्रथाओं को बढ़ावा देना और जन जागरूकता को बढ़ावा देना दीर्घकालिक सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भारत की यात्रा के लिए सरकार, व्यवसायों और नागरिकों की ओर से सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता है ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ ग्रह सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य शब्द प्राकृतिक संसाधन, पर्यावरण संरक्षण, जैवविविधता, पारिस्थितिक तंत्र, औद्योगिक उत्सर्जन।

प्रस्तावना

जीवंत संस्कृति और अपार संभावनाओं वाला देश भारत एक महत्वपूर्ण चुनौती का सामना कर रहा है - आर्थिक विकास को पर्यावरण संरक्षण के साथ संतुलित करना। देश में उपजाऊ भूमि और विविध वनों से लेकर प्रचुर मात्रा में खनिजों तक, समृद्ध प्राकृतिक संसाधन हैं। हालाँकि, ये संसाधन बढ़ती आबादी और तेज़ विकास के कारण दबाव में हैं। स्वच्छ हवा और पानी के लिए महत्वपूर्ण वन, कृषि और बुनियादी ढाँचे के लिए वनों की कटाई के कारण कम हो गए हैं। हालाँकि भारत ने हाल के वर्षों में वन क्षेत्र में वृद्धि देखी है, जो इसके भूमि क्षेत्र का 24.62% तक पहुँच गया है, निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। संयुक्त वन प्रबंधन जैसी पहल, जहाँ समुदाय वन संरक्षण के लिए सरकार के साथ सहयोग करते हैं, आशाजनक समाधान प्रदान करते हैं।

© SARVAGYA

SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 3, October-December 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

जल संसाधन एक और चिंता का विषय है। तेजी से शहरीकरण और औद्योगिक विकास ने मीठे पानी की आपूर्ति को कम कर दिया है। अनुचित सीवर और औद्योगिक कचरे से होने वाला प्रदूषण पानी की गुणवत्ता को और भी ख़तरे में डालता है। राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना और नमामि गंगे कार्यक्रम का उद्देश्य प्रमुख नदियों को साफ करना है, लेकिन अभी भी बहुत काम बाकी है।

भारत में पर्यावरण संबंधी चिंताएँ

प्रदूषण - भारत में वायु और जल प्रदूषण प्रमुख चिंताएँ हैं। औद्योगिक उत्सर्जन, वाहनों का आवागमन और कृषि पद्धतियाँ वायु प्रदूषण में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, जिससे श्वसन संबंधी समस्याएँ होती हैं। औद्योगिक अपशिष्ट और अनुचित सीवर जल निकायों को प्रदूषित करते हैं, जिससे जलीय जीवन और मानव स्वास्थ्य को खतरा होता है।

वनों की कटाई- वन जलवायु को नियंत्रित करने, मिट्टी के कटाव को रोकने और जैव विविधता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दुर्भाग्य से, कृषि, बुनियादी ढाँचे के विकास और ईंधन की लकड़ी के लिए वनों की कटाई एक गंभीर मुद्दा बनी हुई है।

जलवायु परिवर्तन- भारत जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, जैसे समुद्र का बढ़ता स्तर, अनियमित मौसम पैटर्न और चरम मौसम की घटनाएँ। इससे तटीय समुदायों, कृषि और जल सुरक्षा को खतरा है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रयास

भारत सरकार ने इन पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए कई पहलों को लागू किया है। इनमें शामिल हैं:

राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) - 2010 में स्थापित, NGT पर्यावरण संबंधी मुद्दों के लिए एक निगरानी संस्था के रूप में कार्य करता है, जो प्रदूषण फैलाने वालों के खिलाफ़ त्वरित कार्रवाई करता है।

स्वच्छ गंगा के लिए राष्ट्रीय मिशन- 2015 में शुरू की गई, इस महत्वाकांक्षी परियोजना का उद्देश्य गंगा नदी को साफ करना है, जो गंभीर प्रदूषण का सामना कर रही एक महत्वपूर्ण जलमार्ग है।

© SARVAGYA

SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 3, October-December 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

नवीकरणीय ऊर्जा पहल- भारत जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहा है।

वन संरक्षण पहल- संयुक्त वन प्रबंधन (JFM) जैसे कार्यक्रम स्थानीय समुदायों को वन संरक्षण और पुनर्जनन में शामिल करते हैं।

प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध भारत के सामने एक महत्वपूर्ण चुनौती है: आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाना।

भारत में पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के लाभ और हानि पर एक नज़र -

लाभ

सतत विकास- वन और जल निकायों जैसे प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनकी दीर्घकालिक उपलब्धता सुनिश्चित करती है। यह सतत विकास की अनुमति देता है, भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान जरूरतों को पूरा करता है।

बहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य- प्रदूषण को रोकने वाले पर्यावरणीय नियम स्वच्छ हवा और पानी की ओर ले जाते हैं, जिससे श्वसन संबंधी बीमारियों और जल जनित बीमारियों में कमी आती है। इसका अर्थ है एक स्वस्थ आबादी और अधिक उत्पादक कार्यबल।

जैव विविधता संरक्षण- वन और आर्द्रभूमि जैसे प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा भारत की समृद्ध जैव विविधता को संरक्षित करती है। यह न केवल लुप्तप्राय प्रजातियों की सुरक्षा करता है बल्कि पारिस्थितिकी संतुलन को भी बनाए रखता है, जो परागण और बाढ़ नियंत्रण जैसी पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए महत्वपूर्ण है।

जलवायु परिवर्तन शमन- वन कार्बन सिंक के रूप में कार्य करते हैं, ग्रीनहाउस गैसों को अवशोषित करते हैं। वनरोपण और संधारणीय वानिकी प्रथाओं को बढ़ावा देकर, भारत जलवायु परिवर्तन और इसके विनाशकारी प्रभावों को कम कर सकता है।

© SARVAGYA

SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 3, October-December 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

आर्थिक लाभ- इकोटूरिज्म अच्छी तरह से संरक्षित प्राकृतिक परिदृश्य और वन्य जीवन पर पनपता है। संधारणीय संसाधन प्रबंधन से संसाधनों का अधिक कुशल उपयोग भी हो सकता है, जिससे लागत और बर्बादी कम हो सकती है।

हानि

अल्पकालिक आर्थिक लागत- पर्यावरण संबंधी नियमों को लागू करने से उद्योगों के लिए व्यवसाय करने की लागत बढ़ सकती है। इससे नौकरी छूट सकती है और कुछ क्षेत्रों से प्रतिरोध हो सकता है।

आजीविका को संतुलित करना- सख्त पर्यावरण संरक्षण उपाय कभी-कभी प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर समुदायों की आजीविका को प्रभावित कर सकते हैं। इन समुदायों के लिए संरक्षण और संधारणीय आजीविका सुनिश्चित करने के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है।

प्रवर्तन चुनौतियाँ- संसाधनों या जनशक्ति की कमी के कारण पर्यावरण संबंधी नियमों को प्रभावी ढंग से लागू करना एक चुनौती हो सकती है। भ्रष्टाचार भी उचित कार्यान्वयन में बाधा डाल सकता है।

प्रतिस्पर्धी प्राथमिकताएँ- अक्सर तेज़ आर्थिक विकास पर्यावरण संबंधी चिंताओं पर हावी हो जाता है। इससे ऐसी नीतियाँ बन सकती हैं जो दीर्घकालिक स्थिरता पर अल्पकालिक लाभ को प्राथमिकता देती हैं।

सामाजिक असमानता- संसाधनों का असमान वितरण सामाजिक असमानताओं को जन्म दे सकता है। पर्यावरण की सुरक्षा को संसाधनों और विकास लाभों तक समान पहुँच सुनिश्चित करने के साथ-साथ चलना चाहिए।

भारत का सतत विकास का मार्ग एक मध्य मार्ग खोजने में निहित है। सतत प्रथाओं को प्राथमिकता देकर, भारत पर्यावरण संरक्षण के लाभों का दोहन कर सकता है जबकि नुकसान को कम कर सकता है। इसके लिए सरकार, उद्योग और जनता के बीच सहयोग की आवश्यकता है ताकि एक ऐसा भविष्य सुनिश्चित किया जा सके जहाँ आर्थिक विकास और पर्यावरणीय कल्याण एक साथ चलें।

निष्कर्ष

© SARVAGYA

SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153
Vol. 1, Issue 3, October-December 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

भारत जलवायु परिवर्तन के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील है। समुद्र का बढ़ता स्तर तटीय समुदायों के लिए ख़तरा है, और बाढ़ और सूखे जैसी चरम मौसम की घटनाएँ कृषि उत्पादन को बाधित करती हैं। इससे निपटने के लिए, भारत ने महत्वाकांक्षी अक्षय ऊर्जा लक्ष्य निर्धारित किए हैं। सौर और पवन ऊर्जा में निवेश किया है। एक जीवंत भविष्य की कुंजी जिम्मेदार प्रथाओं को अपनाने में निहित है। सटीक कृषि तकनीक पानी के उपयोग को अनुकूलित कर सकती है और रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता को कम कर सकती है। अक्षय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देना और सख्त प्रदूषण नियंत्रण उपाय आवश्यक हैं। जन जागरूकता अभियान जिम्मेदार अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली को प्रोत्साहित कर सकते हैं। भारत के आगे के रास्ते के लिए एक सहयोगी प्रयास की आवश्यकता है। सरकार, व्यवसाय और नागरिक सभी की भूमिका है। आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देकर, भारत आने वाली पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध भविष्य सुनिश्चित कर सकता है।

सुझाव

पानी की शक्ति को अपनाएँ- हर बूँद मायने रखती है! टपकते नलों को ठीक करें, कम समय तक नहाएँ और पौधों को पानी देने के लिए वर्षा जल का संचयन करें।

प्लास्टिक की आदत छोड़ें- एक पुन: उपयोग योग्य पानी की बोतल और शॉपिंग बैग साथ रखें। कम से कम पैकेजिंग वाले उत्पाद चुनें और एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक से बचें।

हरा खाएँ, हरा जिएँ- शाकाहारी बने, मांस की खपत कम करें। स्थानीय रूप से उगाए गए उत्पादों का विकल्प चुनें और रसोई के कचरे को खाद में बदल दें। यह आपके कार्बन पदचिह्न को कम करता है और स्थानीय किसानों का समर्थन करता है।

सूर्य का दोहन करें- अपने घर को बिजली देने के लिए सौलर पैनल लगाने पर विचार करें। ऊर्जा-कुशल उपकरणों पर विचार करने से भी बहुत फ़र्क पड़ता है।

बीज लगाएँ, उम्मीद जगाएँ- अपने समुदाय में पेड़ लगाएँ या ऐसा करने वाले संगठनों का समर्थन करें। पेड़ न केवल पर्यावरण को सुंदर बनाते हैं बल्कि वायु की गुणवत्ता में भी सुधार करते हैं।

© SARVAGYA

इन सुझावों को दोस्तों और परिवार के साथ साझा करें। साथ मिलकर, आपके छोटे-छोटे काम एक बड़ा प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं! पर्यावरण संरक्षण एक सामूहिक प्रयास है। इन छोटे-छोटे बदलावों से आप अपने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ ग्रह बनाने में योगदान दे सकते हैं।

संदर्भित ग्रंथ सूची

1. पर्यावरणीय समस्याएं, विधि और प्रौद्योगिकी - एक भारतीय परिप्रेक्ष्य. रमेश चन्द्रप्पा और रवि.डी.आर, रिसर्च इंडिया प्रकाशन, दिल्ली, 2009, ISBN 978-81-904362-5-0
2. रसेल होपफेनबर्ग और डेविड पिमेंटेल ह्युमन पॉप्युलेशन नंबर्स एस अ फंक्शन ऑफ़ फ़ूड सप्लाई Archived 2008-03-13 at the वेबैक मशीन oilcrash.com
3. नैशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी. 1995. पानी: आशा की एक कहानी. वॉशिंगटन (डीसी (DC)): नैशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी
4. द पॉलिटीक्स ऑफ़ टॉइलेट्स Archived 2010-04-30 at the वेबैक मशीन, *बोलोजी*
5. मुंबई स्लम: धारावी Archived 2018-10-09 at the वेबैक मशीन, *नैशनल ज्योग्राफिक*, मई 2007
6. *कंट्री प्रोफाइल: भारत* . कांग्रेस कंट्री स्टडीज के पुस्तकालय. दिसंबर 2004. 18 मई 2008 को अभिगम. http://lcweb2.loc.gov/frd/cs/profiles/India.pdf Archived 2011-08-05 at the वेबैक मशीन.
7. ए.एस. पराशर द्वारा *ट्रिब्यून*, अगस्त 1997.
8. "Buddha Nullah the toxic vein of Malwa". *Indian Express*. May 21, 2008. मूल से 5 अक्तूबर 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 11 नवंबर 2018.

© SARVAGYA